छत्तीसगढ़ राज्य आजीविका मिशन के सदस्यों ने ली एमआइएस इंट्री की जानकारी

‘टैबलेट दीदी’ का फॉर्मूला भाया

अनगड़ा की टैबलेट दीदी के साथ छत्तीसगढ़ आजीविका मिशन के सदस्य.

पंचायतनामा डेस्क

झारखंड के सुदूरवर्ती इलाकों में टैबलेट पर एमआइएस का काम कर रही दीदियों का अंदाज छत्तीसगढ़ को भा गया है. छत्तीसगढ़ का ग्रामीण विकास विभाग भी अपने राज्य में स्वयं सहायता समूह का संचालन कुछ इसी तरीके से कराना चाहता है. छत्तीसगढ़ के ग्रामीण विकास विभाग की नौ सदस्यीय टीम ने राज्य के उन क्षेत्रों का भ्रमण किया, जहां सखी मंडल की दीदियां बखूबी अपने कार्य को अंजाम दे रही हैं.

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

छत्तीसगढ़ राज्य आजीविका मिशन की नौ सदस्यीय टीम ने नौ मई को अनगड़ा प्रखंड की हेसल पंचायत पहुंच कर एमआइएस इंट्री की जानकारी ली. टीम में शामिल सरगुजा जिला के कार्यक्रम पदाधिकारी नीरज कुमार नामदेव ने बताया कि अभी हाल ही में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस में झारखंड की टैबलेट दीदियों के बारे में पता चला. जानकारी मिली कि झारखंड में स्वयं सहायता समूह ऑनलाइन फॉर्मेट में काम कर रहा है. कॉन्फ्रेंस के दौरान टैबलेट दीदियों के बारे में जानने की जिज्ञासा हुई, जिसके बाद हमलोग यहां देखने आ गये. नामदेव कहते हैं कि भ्रमण के दौरान हमने पाया कि टैबलेट पर काम करना और इंट्री करने का तरीका बेहद आसान और रोचक है. खास बात यह है कि स्वयं सहायता समूह की रिपोर्टिंग ग्राउंड लेवल से हो रही है. हिंदी फॉर्मेट में सॉफ्टवेयर ऐसा काम करता है कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी आसानी से इसे संचालित कर सके. इससे समय भी बचता है और प्रखंड ऑफिस में जाकर इंट्री कराने के झंझट से भी मुक्ति मिलती है. गांव की महिलाओं को इंट्री के लिए कुछ पैसे भी मिल रहे हैं. इससे उन्हें एक साथ दोहरा लाभ हो रहा है. एक तो सखी मंडल से जुड़ कर रोजगार मिल रहा है, वहीं सखी मंडल की दीदियां आत्मनिर्भर बन रही हैं.

हेसल गांव में हैं 47 स्वयं सहायता समूह

रांची जिला मुख्यालय से करीब 18 किमी दूर अनगड़ा प्रखंड की हेसल पंचायत का हेसल गांव स्वयं सहायता समूह के मामले में काफी आगे है. यहां पर करीब 400 घर हैं और 47 स्वयं सहायता समूह. आदिवासी बहुल इस गांव में इतने बड़े पैमाने पर समूह होने से दो ग्राम संगठन बनाये गये हैं. हेसल आंगनबाड़ी केंद्र में 24 स्वयं सहायता समूह को मिला कर एक ग्राम संगठन बनाया गया है. दूसरा, हेसल गांव के प्राथमिक विद्यालय में है. हालांकि, दूसरा ग्राम संगठन अभी नया तैयार हुआ है. इसलिए यहां की मीटिंग और स्वयं सहायता समूह की गतिविधियां ऑफलाइन मोड में होती है. जेएसएलपीएस के अनगड़ा ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर ने बताया कि अनगड़ा ब्लॉक में 1336 स्वयं सहायता समूह का संचालन हो रहा है. इनमें 93 ग्राम संगठन हैं. इन सभी 93 ग्राम संगठनों में टैब फॉर्म में काम हो रहा है. जहां पर टैब से डाटा फीडिंग का काम नहीं होता है, वहां रजिस्टर में इंट्री होती है. इसके बाद ब्लॉक ऑफिस में डाटा इंट्री ऑपरेटर इसकी इंट्री करते हैं. एक स्वयं सहायता समूह के छह महीने के सफल संचालन के बाद सबसे पहले उसे 15000 रुपये का इंटाइटलमेंट होता है. यह स्वयं सहायता समूह का अनुदान होता है, जिससे ग्रुप के सदस्यों के रोजगार के लिए ऋण की व्यवस्था की जा सके. सदस्यों को ऋण का पैसा वापस करना होता है. दूसरी बार, कलस्टर लेवल फेडरेशन के तहत 50 हजार रुपये की राशि स्वयं सहायता समूह को प्रदान की जाती है. यह समूह के लिए ऋण है, जबकि कलस्टर के लिए अनुदान. समूह को यह पैसा वापस कलस्टर को करना होता है. समूह का बैंक लिंकेज भी होता है, ताकि लेन-देन का काम आसान हो और पारदर्शिता बनी रहे.

ऑनलाइन फॉर्मेट में काम करने से पक्की हुई विश्वसनीयता : नीरज कुमार नामदेव

कार्यक्रम पदाधिकारी, सरगुजा जिला, छत्तीसगढ़ के नीरज कुमार नामदेव कहते हैं कि टैब फॉर्म यानी मिनी कंप्यूटर पर काम करने से मैनुअल गलतियां भी कम होती हैं. जोड़-घटाव में गलती की गुंजाइश भी खत्म और एक क्लिक में उधार-बकाया का हिसाब-किताब भी सामने आ जाता है. उधार वापसी, जमा और ऋण के सभी लेन-देन एक साथ रजिस्टर में भी मेंटेन होता है, ताकि किसी तरह की दिक्कत आने पर मैनुअल से भी मिलान किया जा सके. वास्तव में यह फॉर्मूला अच्छा है. एक बार अपलोड कर देने के बाद इसे ऑनलाइन भी देख सकेंगे. साथ में हर दिन की रिपोर्टिंग होने से गड़बड़ी के आसार भी कम हो जाते हैं. खास बात यह कि ग्राउंड लेवल से ही ऑनलाइन फॉर्मेट में काम हो रहा है. इससे इसकी विश्वसनीयता भी पक्की है. ग्राउंड लेवल से ही जब रिपोर्टिंग सही होगी, डाटा सही होगा, तब सही जानकारी मिलेगी. सही जानकारी मिलने से आगे के लिए योजना बनाने में मदद मिलेगी. हम टैबलेट दीदी के इस कार्यक्रम को अपने यहां लागू कराने का प्रपोजल देंगे. उम्मीद है कि छत्तीसगढ़ में चल रहे स्वयं सहायता समूह के लिए यह कार्यक्रम फायदेमंद साबित होगा.

पहले टैबलेट का ‘ट’ नहीं पता था, अब बेधड़क चलाते हैं टैबलेट : बबली करमाली

टैबलेट दीदी उमा, रूबी खातून व बबली करमाली.

अनगड़ा प्रखंड के हेसल गांव की मास्टर बुक कीपर बबली करमाली टैबलेट दीदी के नाम से मशहूर हैं. वह 23 स्वयं सहायता समूह का काम देखती हैं. इन सभी समूहों का हिसाब-किताब लिखना और टैबलेट पर इंट्री करने का काम बबली करमाली करती हैं. वह बताती हैं कि पहले टैबलेट का ‘ट’ भी नहीं पता था. कलम से रजिस्टर पर हिसाब-किताब करते थे. लेकिन, अब टैबलेट बेधड़क चलाते हैं. हम तो पहले दवा वाले टैबलेट के बारे में जानते थे, लेकिन अब पता चला कि टैबलेट का मतलब ‘बड़ा मोबाइल’ होता है. इससे हम व्हाट्सएप, फेसबुक भी चलाते हैं. टैबलेट में स्वलेखा सॉफ्टवेयर से काम होता है. यह हिंदी में है, जिससे हमें काम करने में आसानी होती है. जरूरत पड़ने पर हम इसमें फेरबदल भी करते हैं और जब कुछ खराबी आती है, तो टोल फ्री नंबर पर मदद लेते हैं.

पांच दिवसीय डिजिटल प्रशिक्षण शिविर आयोजित

मैं भी हूं डिजिटल से जुड़ीं सखी मंडल की सदस्य

पंचायतनामा डेस्क

आजीविका से जुड़ी सखी मंडल की दीदियों को अपने आसपास की गतिविधियों से लोगों को अवगत कराने संबंधी प्रशिक्षण दिया गया. राजधानी रांची के सप्तऋषि भवन में पांच दिवसीय डिजिटल ट्रेनिंग का आयोजन हुआ. इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में दीदियों को कंप्यूटर के की-बोर्ड पर शब्दों को पिरोने की कला सिखायी गयी. इसका आयोजन झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी की ओर से किया गया था. इस दौरान कम्युनिटी रिपोर्टर्स को कंप्यूटर की बारीकियों से भी अवगत कराया गया. जेएसएलपीएस के डिजिटल एक्सपर्ट्स की ओर से दीदियों को फोल्डर बनाना, टाइपिंग, वर्ड, पावर प्वाइंट, कैलकुलेटर, पेंट्स आदि तमाम एप्लीकेशन की जानकारी विस्तार से दी गयी. इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कम्युनिटी रिपोर्टर के तहत गांवों की उन खबरों को लोगों के बीच लाना, जो भागमभाग के दौर में हमेशा छूट जाती है.

कंप्यूटर की बारीकियां सिखतीं सखी मंडल की सदस्य.

अब डिजिटल माध्यम से भेजी जायेंगी खबरें : ममता देवी

प्रखंड : मेदिनीनगर
जिला : पलामू

पलामू जिले के मेदिनीनगर प्रखंड की ममता देवी ने भी कंप्यूटर को नजदीक से पहली बार जाना है. ममता देवी ने बताया कि पांच दिवसीय प्रशिक्षण में कैलकुलेटर, टाइपिंग, पेंट और की-वर्ड की जानकारी दी गयी. डिजिटल ट्रेनिंग का फायदा यह हुआ कि अब हमलोग अपनी रिपोर्ट्स डिजिटल फोरम पर भेजेंगे. इससे जल्दी और समय पर हमारी रिपोर्ट जनता तक पहुंचेगी.

डिजिटल ट्रेनिंग से काफी कुछ सीखने को मिला : शबनम खातून

पंचायत : केचकी
जिला : लातेहर

लातेहार जिले के सरइडीह गांव से कम्युनिटी रिपोर्टर शबनम खातून ने बताया कि मैं पहले से ही स्मार्टफोन से प्रभावित हूं. मैं स्मार्टफोन पर रिकॉर्ड कर और उसे कागज पर लिख कर खबरें भेजती हूं. अब कंप्यूटर की ट्रेनिंग दी गयी है. पांच दिनों में काफी कुछ सीखने को मिला है. अब खबरें कंप्यूटर पर लिख कर भेजा जायेगा.

क्या कहती हैं कम्युनिटी रिपोर्टर

कंप्यूटर सीखने से हो रहा है फायदा : रानी कुमारी सोनी

प्रखंड : चैनपुर
जिला : पलामू

पलामू जिले के चैनपुर प्रखंड की रहनेवाली है रानी कुमारी सोनी. रानी कहती हैं कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ कर अन्य दीदियां भी काफी काम कर रही है. गांव में आज भी पानी की समस्या मुंह बाये खड़ी है, लेकिन इसकी सुध लेने की फुरसत किसी को नहीं है. कहती हैं कि पांच दिवसीय डिजिटल प्रशिक्षण के बाद अब अपने गांव की समस्याओं को कंप्यूटर पर टाइप करती है. कंप्यूटर शुरू में थोड़ा असहज लगता है, लेकिन सीख जाने के बाद यह काफी फायदेमंद साबित हो रहा है.

पहली बार कंप्यूटर को छुआ, अच्छा अनुभव रहा : मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड की मुनिया देवी कहती हैं कि मैंने पहली बार कंप्यूटर, माउस और की-बोर्ड को हाथ लगाया है. यह पहला मौका है, जब मैंने कंप्यूटर चलाया भी और टाइपिंग भी की. बहुत अच्छा लगा. पहले कंप्यूटर देखकर आश्चर्य लगता था, लेकिन अब डर दूर हो गया है. अब मैं रोमन में अपनी बात हिंदी में लिखती हूं. स्वयं सहायता समूह से जुड़ी मुनिया देवी ने अभी हाल में कम्युनिटी रिपोर्टर की ट्रेनिंग ली है. ट्रेनिंग के बाद यह पहला मौका है, जब डिजिटल से उन्हें रूबरू कराया गया है.

सखी मंडल की 25 दीदियों ने सीखे गुर

पांच दिनी प्रशिक्षण शिविर में 25 दीदियों को तकनीकी जागरूकता से रूबरू कराया गया. कार्यक्रम का नाम ‘मैं भी हूं डिजिटल’ रखा गया है. इन दीदियों को इस प्रशिक्षण शिविर के 15 दिन बाद दोबारा पांच दिनी ट्रेनिंग दी जायेगी, जिसमें कंप्यूटर के एडवांस तकनीक बताये जायेंगे. प्रशिक्षण शिविर में पलामू, पाकुड़, गिरिडीह, खूंटी, रांची सहित अन्य जिलों की दीदियों ने शिरकत की.

बैंक सखी से गांवों में आयेगी आर्थिक क्रांति

झारखंड के सुदूरवर्ती इलाकों में बैंकिंग सुविधा पहुंचानेवाली बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी (बीसी सखी) को मुख्यमंत्री रघुवर दास ने 12 मई को सम्मानित किया. मौका था राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी की त्रैमासिक बैठक का. मुख्यमंत्री ने कहा कि गांव की बहनों में हुनर है. जरूरत है उसे निखारने की. बैंकिंग सखी समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों को सुविधा मुहैया करा रही हैं. इससे राज्य की अर्थव्यवस्था के विकास में सहयोग मिलेगा. मुख्यमंत्री ने बैंकर्स कमेटी को यह निर्देश दिया कि तीन महीने के अंदर 2000 बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट सखी ट्रेंड करें, ताकि गांवों में बिचौलियागिरी पर लगाम लगाया जा सके. साथ ही विशेष शिविर लगा कर सखी मंडलों का बैंक लिंकेज कराने में बैंक सखी का भरपूर सहयोग लिया जाये. कैंप लगा कर 31 मई तक सभी के खाते खोलें. मौके पर बेहतर काम करनेवाली सखी मंडल, स्वयंसेवी संस्थाओं और बैंकों के प्रतिनिधियों को पुरस्कृत किया गया. कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव अमित खरे, ग्रामीण विकास विभाग के प्रधान सचिव एनएन सिन्हा, वित्त सचिव सत्येंद्र सिंह, परिवहन सचिव केके खंडेलवाल, कृषि सचिव पूजा सिंघल, राजस्व सचिव केके सोन सहित अन्य लोग मौजूद थे.

मुख्यमंत्री रघुवर दास से बेहतर कार्य के लिए पुरस्कृत होती बैंक सखी.

उद्देश्य

गरीब ग्रामीण परिवार, जो सुदूर गांवों में रहते हैं, उन तक बैंकिंग सेवाएं नहीं पहुंचती हैं. बैंकिंग सखी कॉरस्पॉन्डेंट के माध्यम से यह सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है कि राज्य के सुदूर गांवों के हर परिवार की चौखट तक वित्तीय/बैंकिंग सेवाएं अल्टरनेटिव बैंकिंग चैनल के जरिये पहुंचा कर राज्य के विकास में सबकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके.

लक्ष्य

- कैशलेस झारखंड को बल देते हुए सुदूर गांवों तक डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देना
- ग्रामीण क्षेत्रों के हर परिवार तक वित्तीय सेवाओं की पहुंच सुलभ किया जा सके
- बैंक को लेकर ग्रामीणों के डर को खत्म किया जा सकेगा
- ग्रामीण परिवारों को विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं जैसे बीमा, पेंशन से जोड़ना
- माइक्रो एटीएम, पीओएस के जरिये मिनटों में लेन-देन, जमा-निकासी, फंड ट्रांसफर एवं बिल जमा का निष्पादन
- सखी मंडलों के क्रेडिट लिंकेज में मदद
- सखी मंडल, ग्राम संगठन, संकुल संगठनों को ग्राम स्तर पर बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराना
- आधार कार्ड सीडिंग एवं लेन-देन में उपयोग
- विधवा पेंशन, बुजुर्ग पेंशन, मनरेगा मजदूरी का ग्राम स्तर पर भुगतान

लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है. दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एवं झारखंड ग्रामीण बैंक के संयुक्त प्रयास से सखी मंडलों की सक्रिय महिला सदस्यों को प्रशिक्षण उपलब्ध करा कर बीसी सखी के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है. वर्तमान में 45 बैंक सखी विभिन्न इलाकों में काम कर रही हैं. सखी मंडल की बहनें एक ओर जहां इस पहल से अपनी आय को बढ़ा रही हैं, वहीं सुदूर गांवों के आखिरी परिवार तक को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने का कार्य भी बखूबी कर रही हैं.

बैंक सखी से मजबूत होगी ग्रामीण अर्थव्यवस्था

बैंक सखी मॉडल के जरिए झारखंड के दूर-दराज समेत तमाम ग्रामीण इलाकों को डिजिटल बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने का प्रयास अब रंग ला रहा है. इस मॉडल को झारखंड स्टेट

सभी किसानों को दें केसीसी

सीएम ने कहा कि राज्य में लगभग 38 लाख किसान हैं. लेकिन, यह सबसे दुखद बात यह है कि मात्र 13 लाख किसानों के पास किसान क्रेडिट कार्ड है. लगातार बैठकों के बाद भी सभी के केसीसी नहीं बन पाये हैं. बैंक कार्य योजना तैयार कर किसानों को समयबद्ध केसीसी उपलब्ध कराएं. रूपे कार्ड के वितरण और एक्टिवेशन की स्थिति संतोषजनक नहीं है. इसमें भी सुधार करें. सीएम ने कहा कि गांव के लिए हमारे पास कई योजनाएं हैं. हम गांवों के लिए ग्रामीण बस सेवा शुरू करने जा रहे हैं. स्टार्टअप इंडिया के तहत ग्रामीण युवाओं को बस खरीदने के लिए बैंक ऋण मुहैया कराएंगे.

नियुक्त होंगे 300 प्रोफेशनल

ग्रामीण महिला और युवाओं को हुनरमंद बनाने के लिए इस साल कौशल विकास के तहत 700 करोड़ रुपये का बजट रखा गया है. मुख्यमंत्री लघु उद्यमी बोर्ड के माध्यम से लाह, तसर के उत्पाद बना कर इसकी मार्केटिंग करायी जायेगी. हस्तशिल्प उत्पादों की भी मार्केटिंग सरकार बोर्ड के माध्यम से करेगी. बोर्ड में जिला और प्रखंड स्तर पर 300 एमबीए प्रोफेशनल्स की नियुक्ति होगी. इनके नियुक्ति से बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, वहीं हस्तशिल्प उत्पादों को भी बढ़ावा मिलेगा.